Best Compliment from

Vianney Jubilee School

BALLARPUR

Dist. Chandrapur - 442 701 (M.S.)
CISCE No. : MA267
Mob. : 07172-240453, 7038552246

मौनस्योर जोसफ कुषिंजालिल

(मृत्यू वर्षगाठ की रूबी जुबली 1983 – 2023)

संस्थापक, माँ मरियम की बेटियाँ

Happy Birthday

Ann Rose Toppo
05/12/2018

Ishana Ekka
14/12/2014

Omisha Mariya Ekka
04/01/2011

Alwin Nelson Raniya
10/01/2013

Bp. Ephrem Nariculam
10th December

Edited by
Holy Childhood Association
Diocese of Chanda
Bishop's Home,
Ballarpur - 442 701

Printed by
Kiranoday Enterprises
Main Road,
Ballarpur - 442 701

बहस

एक दिन गधे और बाघ में घास के रंग को लेकर बहस हो गई। गधे ने कहा: घास का रंग नीला है। बाघ ने कहा: घास का रंग हरा होता है। काफी देर तक बहस करने के बाद भी दोनों किसी एक नतीजे पे नहीं पहुंच पाए। अंत में से दोनों ने राजा के पास जाने का फैसला किया। ट्रायल शुरू हो गया। दोनों ने अपनी व्यथा राजा के सामने रखी। दोनों की बाते सुनके सबने अपने तर्क दिए। राजा ने फैसला लिया। फैसला सुनने के लिए दर्शकों के कान तेज हो गए थे। लेकिन जब राजा ने फैसला सुनाया तो सभी को निराशा हुई। क्योकि राजा ने बाघ को एक माह की कठोर कारावास सुनाई! गधा निर्दोष है! बाघ ने असहमति जताते हुए पूछा: राजा, घास का रंग हरा नहीं है?

राजा : हाँ।

बाघ : तो फिर सच बोलने पर मुझे जेल में क्यों डालते हो?

राजा : आप सही कह रहे हैं, लेकिन आपने जो सबसे बड़ी गलती की, वह इस तरह के विषय पर गधे के साथ बहस करना था! ये सजा इसलिए है कि जो बातें फिर से समझ में नहीं आती उनसे तुम बहस मत करो!!!

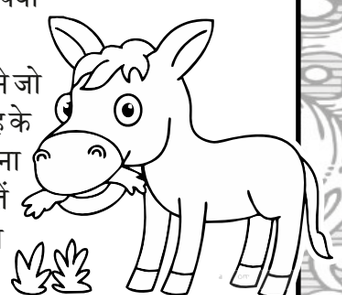

बेवजह बोलने वालों से, सांस्कृतिक भाषा में बहस करने वालों से, खरगोश के गोरे को गिनने वालों से और गलत को जानकर भी हार नहीं मानने वालों से बहस मत करो....!

विरोध संख्या 317/2022

मेरे प्यारे बच्चों,

बालक येशु के नाम पर,

आप सभी को नमस्कार!

हम वर्ष के 2022 अंत की ओर हैं और क्रिसमस आने ही वाला है। मैं आप सभी को क्रिसमस और अनुग्रह से भरे नव वर्ष 2023 की शुभकामनाएं देता हुँ। सन 2022 ये वर्ष येशु के पवित्र हृदय के रूप में मनाने के बाद, अब हम संस्कारों के वर्ष में प्रवेश कर रहे है। चर्च में हमारे सात संस्कार हैं। मसीह हमारे ईश्वर और उद्धारकर्ता ने हमारे पवित्रीकरण के लिए और दिव्य आत्मा के साथ हमारे दिलों की एकता के लिए सात संस्कारों की स्थापना की। संस्कार ग्रहण करने से कलीसिया हमें सिखाती है, कि हमारे पापों के लिए हमें क्षमा करके ईश्वरीय अनुग्रह के साथ आशीर्वाद दिया गया है। संस्कारों के वर्ष में हम संस्कार के बारे में अधिक गहराई सें अध्ययन करेंगें और इसे अधिक बार प्राप्त करेगें और ईश्वर के बच्चे बनेगें। (गला 3:26) — अच्छा होना और अच्छा करना (लूका 13:22, प्रेरितों के नाम 10:38) ईश्वर आप सबका भला करे।

बालक येशु में आपका,

बी एफ्रेम नरिकुलम
चांदा धर्मप्रांत के धर्माध्यक्ष

क्रिसमस

प्रारम्भ में ईश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी की सृष्टि की। सुर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र और अलग अलग प्रकार के पेड़ पौधों जीव जन्तुओं की भी सृष्टि की। अंत में ईश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की और ईश्वर ने अपने प्रतिरूप में आदम और हेवा को बनाया। आदम और हेवा ने ईश्वर से प्रेम करते हुए और उनकी आज्ञा मानते हुए अदन वाटिका में आनन्दमय जीवन बिताया। ईश्वर ने आदम और हेवा से यह कहा था कि वाटिका के सब वृक्षों के फल खा सकते हैं। परन्तु वाटिका के बीचों बीच स्थित भला–बुरा जानने वाले वृक्ष के फल मत खाना (उत्पत्ति 2:16-17)।

शैतान एक दिन साँप के रूप में हेवा के पास आया और जिसे प्रभोलित किया कि वह उस वृक्ष का फल खाये जिसे ईश्वर ने खाने के लिए मना किया था। इस कारण, अदन वाटिका से ईश्वर ने उन्हे बहार निकाल दिया। इस प्रकार संसार में पाप आया फिर भी ईश्वर ने उस पर करूणा दिखायी और वादा किया कि इस संसार के लिए एक रक्षक को भेजूगा वह उनके लिए उध्दारकर्ता / मुक्तिदाता होगा।

नाजरेत नामक नगर में एक कुवारी के पास ईश्वर ने स्वर्गदूत को भेजा गया, जिसकी मगनी दाऊद के घराने के युसुफ नामक पुरूष से हुई थी और उस कुँवारी का नाम मरियम था। स्वर्गदूत ने कहा '' हे मरियम, डरिए नही, आपको ईश्वर की कृपा प्राप्त है। देखिए आप गर्भवती होंगी, पुत्र को प्रसव करेगी और उनका नाम ईसा रखेगी। वे महान होंगे और सर्वोच्च ईश्वर के पुत्र कहलायेगें।'' (लूकस 1: 30-32)

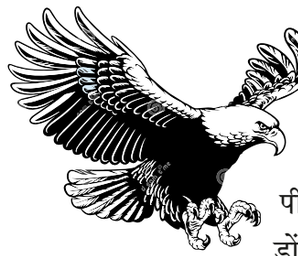

जवाब

आकाश का एकमात्र पक्षी जो चील का पीछा करने की हिम्मत करता है वह एक काला ड्रोंगो है। यह चील के पीछे बैठता है और गर्दन को काटता है। हालांकि, ईगल ड्रोंगो का जवाब या लड़ाई नहीं करेगा। यह ड्रोंगोई के साथ समय और ऊर्जा बर्बाद नहीं करेगा। यह अपने पंख खोलती है और आसमान में ऊंची उड़ान भरने लगती है।

ऊंचाई पर, ड्रैंगो को सांस लेना मुश्किल होता है, ड्रोंगो अंत में ऑक्सीजन की कमी के कारण गिर जाता है। आपको सभी लड़ाइयों का जवाब नहीं देना है। आपको सभी तर्कों और आलोचकों का जवाब देने की ज़रूरत नहीं है। अपनी लड़ाई सोच समझ कर चुनें.... आइए अपने मानकों को बढ़ाएं। उनके साथ बहस करके समय बर्बाद करना बंद करें। उन्हें अपनी ऊंचाई तक ले जाएं और वे फीके पड़ जाएंगे। शत्रु पीठ के बल बैठकर आपको गर्दन पर काट सकता है... लेकिन याद रहे, समय सबको अवसर देता है... अपने "उच्च उद्देश्य" को आपको ऊंचा ले जाना है। जहां दुश्मनों के लिए आपको परेशान करना मुश्किल हो! हमें किसी को छोटा करने के लिए समय नहीं देना पड़ता... हम बस खुद को विकसित करने में समय लगाते हैं.. वे खुद को छोटा बना लेंगे...

फिर वह स्त्री घर के बाहर प्रभु का इंतजार करती रहती है तब वह देखती है कि एक गरीब बुजूर्ग गुजरता रहता है उसे वह रूकाकर कुछ पैसे और भोजन देती है वह उसे लेकर चला जाता है।

फिर वह घर के भितर जाकर सोचने लगी कि जब पवित्र परिवार (Holy Family) आएगें तब मैं उन्हे क्या दुंगी अब तो मेरे पास कुछ ही खाना बचा हुआ है फिर वह प्रार्थना कर रही थी की उसी क्षण उसे प्रभु का दर्शन मिला। दर्शन में प्रभु ने उसे कहाँ हमने भोजन कर लिया आपने स्वादिष्ट बनाया था तब उसने कहा आप तो मेरे घर पर नही आए तो आपने कब खाया।

तब प्रभु ने कहा जो तीन व्यक्ति आए थे वे माता मरियम बाल येशु और संत युसुफ थे।

हे स्त्री तुम धन्य हो

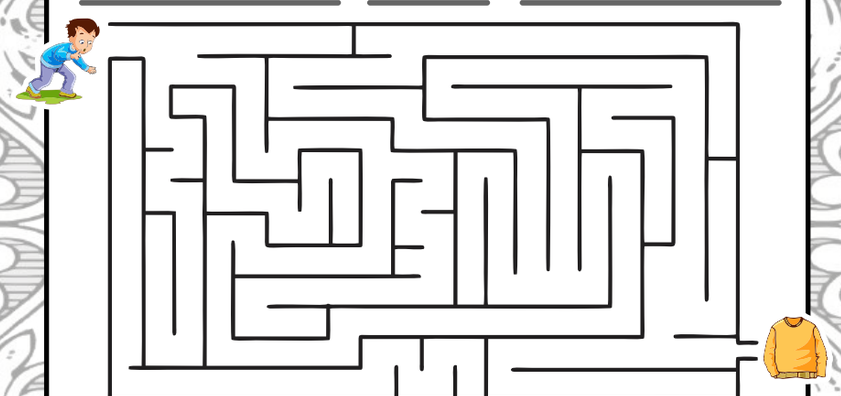

माता मरियम पवित्र आत्मा से गर्भवती हो गयी उसका पति युसुफ चुपके से उसका परित्याग करने की सोच रहा था। युसुफ को स्वप्न में प्रभु का दूत यह कहते दिखाई दिया ''युसुफ! दाऊद की संतान अपनी पत्नी मरियम को अपने यहा लाने से नही डरे जो उनके गर्भ में हैं वह पवित्र आत्मा से है। क्योकि वे अपने लोगो को उनके पापों से मुक्त करेगा। (मत्ती 1: 19-20, 21) युसुफ ने माता मरियम को अपने पत्नी के रूप में स्वीकार किया।

उन दिनों कैसर अगस्तस ने समस्त जगत की जणगणना की राजाज्ञा निकाली यह यह पहली जणगणना थी। सब लोग नाम लिखवाने के लिए अपने अपने नगर गये। युसुफ दाऊद के घराने और वंश का था इसलिए वह गलीलिया नाजरेत से यहुदिया में दाऊद के नगर बेथलहेम गया जिसे वह अपनी गभर्वती पत्नी का नाम लिखवाये। माता मरियम के गर्भ के दिन पुरे हो गये, लेकिन उन्हे बेथलहेम के सराय में जगह नही मिली। उन्हे एक गौशाले में जगह मिली। माता मरियम ने इसा मसीह को बेथलहेम के वह गौशाला में जन्म दिया। वह ईसा मसीह है इस दुनिया के मुक्ती दाता।

क्रिसमस क्या है?

क्रिसमस अतीत के लिए कोमलता है, वर्तमान के लिए साहस है, भविष्य के लिए आशा है।

- एगनेस एम पहरों

सेंट डोमिनिक सावियो

सेंट डोमिनिक सावियो का जन्म 2 अप्रैल, 1842 को उत्तरी इटली के रीवा गाँव में हुआ था। उनके पिता एक लोहार और उनकी माँ एक दर्जी थीं। उनके नौ भाई-बहन थे। जब वह सिर्फ दो साल का था, तो डोमिनिक का परिवार जॉन बॉस्को के जन्मस्थान के पास अपने पैतृक गांव कैसलनुओवो डी एस्टी, (आज, कैसलनुओवो डॉन बॉस्को) लौट आया। एक छोटे बच्चे के रूप में, डोमिनिक प्रभु और उनके चर्च से प्यार करता था। वह अपने कैथोलिक विश्वास का अभ्यास करने में बहुत समर्पित था। डोमिनिक अपनी मां के साथ नियमित रूप से चर्च जाता था। उन्होंने सात साल की उम्र में अपना पहला भोज प्राप्त करने के लिए कहा। उस समय इटली के चर्च में यह प्रथा नहीं थी। आम तौर पर, बच्चों को बारह वर्ष की आयु में अपना पहला पवित्र भोज प्राप्त हुआ। डोमिनिक के पुजारी विश्वास के विषय में उसकी बुद्धिमत्ता, प्रभु के प्रति उसके प्रेम और उसकी धर्मपरायणता से इतने प्रभावित हुए कि उसने एक अपवाद बना दिया। डोमिनिक ने कहा कि उनकी पहली प्रभु भोज का दिन उनके जीवन का सबसे खुशी का दिन था। युवा डोमिनिक ने माध्यमिक विद्यालय में स्नातक किया और प्रत्येक दिन तीन मील पैदल चलकर स्कूल जाता था। डोमिनिक के शिक्षक ने उसके बारे में अच्छी बात की और उसे फादर के ध्यान में लाया। जॉन बोस्को, जो सैकड़ों लड़कों की देखभाल करने के लिए

पवित्र परिवार के दर्शन

कश्मीर के एक छोटे से गाँव में एक स्त्री रहती थी जो परमेश्वर पर श्रध्दा रखती थी एक सुबह वह प्रभु की प्रार्थना में विलिन थी। उसकी भक्ति देख कर परमेश्वर प्रसन्न हुए। उसके दर्शन में प्रभु ने यह कहा कि बेटी तुम्हे क्या चाहिए। उसने कहा आपका दिया हुआ सब कुछ है मेरे पास मुझे और कुछ नही चाहिए मै बस यही चाहती हु कि आप पवित्र परिवार (Holy Family) के साथ मेरे घर प्रीतीभोज के लिए आए।

अगले दिन वह अपने घरे को अच्छी तरह से सजाकर खाने के लिए अलग अलग पदार्थ बनाती है। वह प्रभु की प्रतिक्षा करती रहती है। तभी उसे दरवाजे पर खटखटाने की आवाज आती हैं वह आनंदपूर्वक दरवाजा खोल कर देखती है, तो उसे दरवाजे के सामने एक स्त्री दिखती है, वो ठंड के कारण कापते रहती है। उस स्त्री को देखकर उसे उस पर दया आती है वह अपना स्वेटर और शॉल उसे देती है वह स्त्री उसे लेकर चली जाती है।

वह बैठकर प्रभु की राह देखती रहती है। कुछ देर बाद एक बच्चे की रोने की आवाज आती है, तब वह खिडकी से झाक कर देखती है तो उसे एक छोटा बच्चा रोते हुए नजर आता है तब वह उसका बनाया हुआ भोजन मे से आधा भोजन देती है। और वह शांत होकर खाना खाकर चला जाता है।

के देहांत के बाद उनकी शिक्षा मानेस्ट्री में हुई। १७ साल की उम्र ही उन्हे पादरी की उपाधी मिल गई। बताया जाता है कि सेंट निकोलस स्वभाव से काफी दयालु थे। वह हमेशा जरूरतमंदो की सहायता करते। बच्चे उन्हें बहुत प्रिय थे, वह उन्हें उपहार देते रहते थें। वह उनके इसी स्वभाव के कारण माना जाता है कि उनकी मृत्यु के पश्चात सांता क्लॉज क्रिसमस पर बच्चों को उपहार देते थे। तभी से यह परंपरा आरंभ हुई।

यह बताया जाता है कि सेंट निकोलस मध्यरात्री जब सब गहरी निद्रा में होते थे, तब वे बाहर निकलते थे और गरीबों के घर उपहार और उनके बच्चों के लिए खिलौने और खाने–पिने का सामान रख आया करते थें। उनकी मृत्यु के बाद लोगों ने इस परंपरा को कायम रखा। तब से आम लोग भी उनकी तरह वस्त्र धारण कर रात में बच्चों को उपहार देने लगे।

सांता क्लॉज की कथा से हमें यह सीख मिलती है कि हमें कोई श्रेय न लेते हुए निस्वार्थ भाव से परोपकार करना चाहिए।

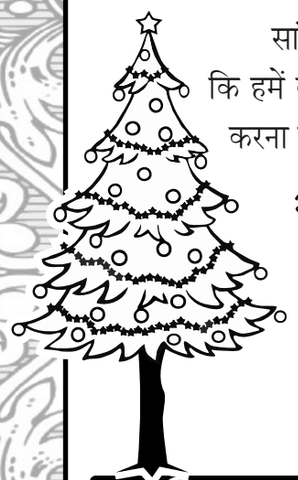

खुशियों का दिन तोहफों का दिन,
सांता आएगा कुछ देकर जाएगा,
भूल न जाना उसे शुक्रिया कहना,

– सार्थक

प्रसिद्ध थे, उनमें से कई अनाथ और गरीब थे। डोमिनिक ने एक पुजारी बनने में रुचि व्यक्त की और सेंट फ्रांसिस डी सेल्स के वक्तृत्व में भाग लेने के लिए ट्यूरिन जाने के लिए कहा। फादर बोस्को उसे लेने के लिए तैयार हो गए। ऑरेटरी में, डोमिनिक ने सीधे फादर के अधीन अध्ययन किया। उन्होंने लगन से काम किया और हमेशा कुछ न समझ पाने पर सवाल पूछते थे।

हालाँकि संत बनने की इच्छा ने डोमिनिक को परेशान कर दिया। वह मन ही मन सोच रहा था कि इतनी कम उम्र में कोई संत कैसे बन सकता है? अपने उत्साह में, उन्होंने स्वैच्छिक वैराग्य और अन्य स्वैच्छिक तपस्याओं की कोशिश की, उम्मीद है कि वे उन्हें यीशु के करीब बढ़ने में मदद करेंगे और उन्हें अपनी जरूरतों से कम चिंतित होने में मदद करेंगे। उसी समय डोमिनिक एक शानदार छात्र के रूप में अपनी प्रतिष्ठा विकसित कर रहा था, उसका स्वास्थ्य विफल होने लगा। उसने अपनी भूख कम करनी शुरू कर दी और फा. बोस्को चिंतित हो गए। डोमिनिक को डॉक्टर के पास ले जाया गया जिसने सिफारिश की कि उसे ठीक होने के लिए अपने परिवार के पास घर भेज दिया जाए। हर किसी को उम्मीद थी कि डोमिनिक ठीक हो जाएगा, सिवाय खुद डोमिनिक के जिसने जोर देकर कहा कि वह मर रहा है। उनके जाने से

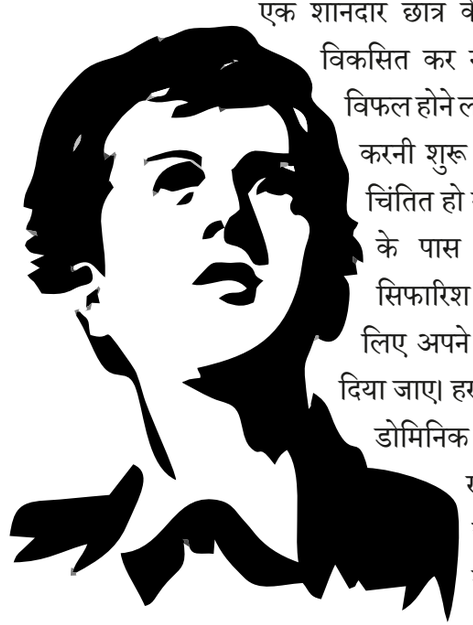

पहले, डोमिनिक ने हैप्पी डेथ का अभ्यास किया और भविष्यवाणी की कि यह उनकी अंतिम भक्ति होगी। चार दिन घर पर रहने के बाद डोमिनिक की तबीयत बिगड़ गई। डॉक्टर ने आराम करने के लिए बिस्तर पर जाने को कहा। इसके बाद उन्होंने रक्तपात किया, जो उस समय भी किया जाता था।

लेकिन डॉमिनिक अपनी आसन्न मृत्यु के प्रति अश्वस्त था। उसने अपने माता-पिता से पल्ली पुरोहित को लाने के लिए विनती की ताकि वह अंतिम स्वीकारोक्ति कर सके। उन्होंने उसे बाध्य किया और डॉमिनिक ने एक स्वीकारोक्ति की और उसे बीमारों का अभिषेक दिया गया। उसने अपने पिता से उसे हैप्पी डेथ के अभ्यास के लिए प्रार्थना पढ़ने के लिए कहा। फिर वह सो गया। घंटों बाद वह उठा और अपने पिता से कहा: "अलविदा, पिताजी, अलविदा ... ओह, मैं क्या अद्भुत चीजें देख रहा हूँ!" डोमिनिक सो गया और कुछ ही मिनटों में उसकी मृत्यु हो गई। वह 9 मार्च, 1857 की बात है और डोमिनिक की उम्र महज 14 साल थी।

फादर बॉस्को को डोमिनिक ने शक्तिशाली रूप से छुआ और उन्होंने एक जीवनी लिखी, "द लाइफ ऑफ डोमिनिक सेवियो।" जीवनी जल्दी से लोकप्रिय हो गई और अंततः पूरे इटली के स्कूलों में पढ़ी जाएगी। जैसा कि लोगों को डोमिनिक के बारे में पता चला, उन्होंने उसके कैनोनाइजेशन का आह्वान किया। डोमिनिक सैवियो को 1933 में पोप पायस XI द्वारा आदरणीय घोषित किया गया था, 1950 में धन्य घोषित किया गया था, फिर 1954 में पोप पायस XII द्वारा संत घोषित किया गया था। सेंट डोमिनिक गाना बजानेवालों, झूठे अभियुक्तों और किशोर अपराधियों के संरक्षक संत हैं। उनका दावत का दिन 6 मई है, जो 9 मार्च से स्थानांतरित हो गया है। लड़कों को समर्पित कई स्कूल और संस्थान उन्हें समर्पित हैं।

सांता क्लॉज

क्रिसमस त्योहार आने में अब कुछ ही समय शेष है। क्रिसमस का त्योहार वाकई एक ऐसा पर्व होता है जिसे लेकर साल भर इंतजार किया जाता है। खुब सारी तैयारिया की जाती है, कुल मिलाकर क्रिसमस खुशिया लेकर आता हैं। हालाकि क्रिसमस का जिक्र होता है तो दाढीवाले बाबा यानी सांता क्लॉज की बात होना भी उतना ही स्वाभाविक है खासकर बच्चों में सांता को लेकर खास उत्साह रहता है उन्हें इस बात का पूरे साल इंतजार होता है कि सांता उन्हें तोहफा देने जरूर आएगें। इसलिए क्रिसमस का इतिहास जानने की तरह ही सांता के बारें में जानना उतना ही जरूरी है।

ऐसा माना जाता है कि सांता क्लॉज को सेंट निकोलस, फादर क्रिसमस के नाम से भी पुकारते हैं। हालांकि सांता क्लॉज और जीसस के बीच कोई संबध नही है। मगर फिर भी सांता क्रिसमस का महत्वपूर्ण भाग है। ऐसा मना जाता है कि सेंट निकोलस का जन्म तिसरी सदी में तुर्किस्तान के मायरा नाम के शहर में हुआ था। जीसस के मृत्यु के करीब २८० साल बाद उनका जन्म हुआ था।

सेंट निकोलस की जीसस में अटूट आस्था थी। माता–पिता

मेरे प्यार के रूमाल से
मैं तेरा चेहरा पोछूँगी
मेरे प्यारे बालक येशू

देखिए वहाँ पर वह अपना क्रुस लेकर कलवारी के रास्ते पर है। वह अपनी रूमाल बॅग से बाहर निकालकर आगे दौडकर. उसके सामने घूटने टेकती है। किसी ने भी उसे रोका नही। येशू उसके ऑखो से कहाँ,

इस प्यार के रूमाल पर
मैं अपने चेहरे का अमिट
छाप छोड जाता हूँ''

हाँ दोस्तो वह छोटी सी नारी वेरोनिका।

रंभ भरिये

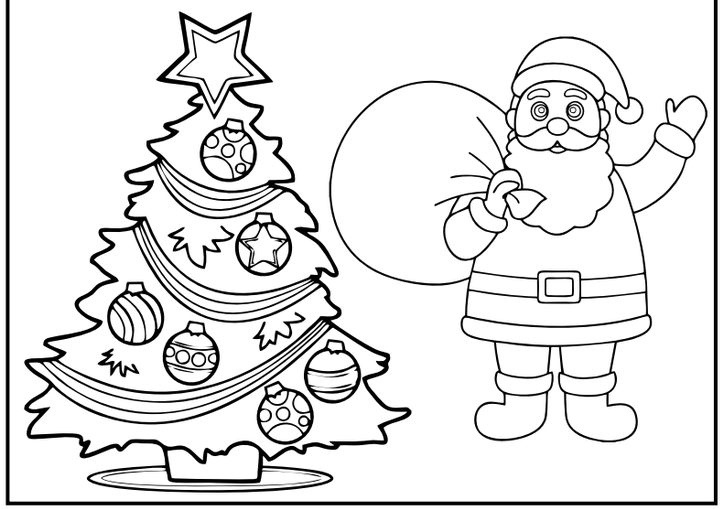

क्रिसमस ट्री

क्रिसमस ईसाइयों का पवित्र पर्व है जिसे वह बडा दिन भी कहते हैं। प्रतिवर्ष २५ दिसंबर को प्रभु ईसा मसीह के जन्मदिन के रूप में संपूर्ण विश्व में ईसाई समुदाय के लोग विभिन्न स्थानों पर अपनी–अपनी परंपराओं एवं रीति–रिवाजों के साथ श्रध्दा, भक्ति एवं निष्ठा के साथ मनाते हैं।

क्रिसमस के पर्व पर एक बड़ा आर्कषण है '' क्रिसमस ट्री'' अर्थात '' क्रिसमस वुक्ष'' का विशेष महत्व है। आस्था के साथ–साथ इसमें स्वास्थ और खुशहाली कि मान्यताएँ भी जुडी है। २५ दिसंबर से पहले क्रिसमस की जो सबसे अहम तयारी है उनमें एक क्रिसमस ट्री की सजावट भी है। बड़े –बच्चे–बुजुर्ग सभी क्रिसमस वृक्ष की सजावट करते है। इस पेड को घंटी, गिफ्टस, फल–फुल और आदि रंगबिरगें खिलौनो से सजाते है।

प्राचीन काल में क्रिसमस ट्री को जीवन की निरंतरता का प्रतिक माना जाता था। मान्यता थी कि इसे सजाने से घर के बच्चों की आयु लम्बी होती है। इसी कारण क्रिसमस डे पर क्रिसमस वुक्ष को सजाया जाने लगा। माना जाता है कि इसे घर में रखने से बुरी आत्मांए दूर होती है तथा सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होता है। बाजार में कई मिलते है। इनमें से कुछ सस्ते एवं कुछ काफी महगें भी होते है। कई दूकानों पर यह शोपीस के रूप में उपलब्ध होते है।

– श्रावणी

क्रिसमस की घंटियाँ

घंटियाँ समाज में मौजूद सद्भाव का प्रतिक है। क्रिसमस की घंटियाँ को सुरक्षितता और नकारात्मकता को दूर करने का प्रतिक माना जाता हैं। घंटियाँ एक घटना, गतिविधी या अवसर के आने की घोषणा करते है। यह घंटियाँ क्रिसमस के दौराना बजाई जाती हैं ताकि वह ईसा मसीह के जन्म की घोषणा कर सके।

घंटि के बजाने का पता बुतपरस्त शीतकालीन समारोहों से लगाया जा सकता हैं उस समय, रात में बुरी आत्माओं को डराने के लिए शोर मचाते वाले चीजों का इस्तेमाल किया जाता था। उन शुरूआती शोर का जमकर लुत्फ उठाया। राक्षसों को भगाने के लिए सिर्फ घंटि का इस्तेमाल करना बहुत मजेदार था। इसलिए समय के साथ, घंटी बजाने को अन्य कार्यक्रमों और गतिविधियों में शामिल किया गया। लोगों को इकट्ठा करने के लिए, चेतावनियों के रूप में और घोषणा करने के लिए लोगों को एक साथ लाने के लिए चर्चो में घंटि बजाई जाती है।

इन क्रिसमस की घंटि को जिंगल बेल के नाम से भी जाना जाता हैं। यह बेल्स क्रिसमस ट्रि को सुशोभित करने के लिए उनपर लगाई जाती है। उनके चमकीले रंग की वजह से वह चाँदनी रात में भी तारों की तरह चमकती हैं उनकी लुभावनी और मधुर आवाज बच्चों तथा बुढ़ों को आकर्षित करती है। और उनके मन को प्रसन्न करती है।

– रेनु डी.

वेरोनिका

जब बालक येशु का जन्म गोशाले मे हुआ तब चरवाहो के परिवार ही उनके पडोसी बने। इन गरीब लोगो ने ही इस परदेशीयों का आदर किया। एक चरवाही लडकी इस बालक येशू की दोस्त बनी। उसकी जिंदगी इस पवित्र परिवार के आसपास बनता गया। अपना छोटासा मेमना बालक येशू को तोहफे के रूप मे दिया। सिर्फ शाम ढलते ही वह छोटी अपने घर लौटती थी। जैसे ही सुबह होता तो वह दूध के साथ बालक येशू के पास पहूँचती थी, और वह बनी उस पवित्र परिवार की चौथी सदस्या। वह खुद से कहती थी, ''कितना धन्य है मेरा बचपन।''

एक दिन अचानक जब वह उस जगह पर पहूँची तो पवित्र परिवार वहॉ से गायब हो गया था। वहॉ पर छोटासा मेमना अकेला ही पडा रो रहा था। छोटी को कुछ भी समझ मे नही आया। कुछ दिन बाद उसे पता चला की, उन्हे इजिप्त भागना पडा। लेकीन वह हार नही मानी, अपने मेमने के साथ वह वापस घर गई। अपने पापा से कह कर उस मेमने के सफेद उन कटवा लिए और अपने मॉ से कह कर एक सुंदर सा सफेद रूमाल सिलवाया ''ये मै मेरे बेबी को तोहफे मे दूँगी, मै उसे ढूंढने मे हार नही मानूँगी। उसका दिल, शरीर एवं आत्मा उसके लिए तैयार कर रही थी। वह अनुग्रह भरे रास्ते पर चलती रही। उसकी एक ही इच्छा थी। उसे पाने के लिए बीते तेहतीस साल वह यह गुनगुनाते हुए चलती थी की,

आर — रिकानसिलिएशन या पूर्मिलन या मेल मिलाप को दर्शाता है।

इसलिए ही कहा जाता है।

"देखो क्रिसमस है आया
देवें खुशियाँ संग लाया

"चारों तरफ है सितारो की चमक
है संग आंता क्लॉस की दमक"

डोमिनिक सवियो अपने पहला परम प्रसाद के दीन लिए चार वादे।

- **मैं अक्सर स्वीकारोक्ति के लिए जाऊंगा, और जितनी बार मेरे विश्वासपात्र अनुमति देंगे, उतनी बार पवित्र भोज में जाएंगे।**
- **मैं रविवार और त्योहारों को एक विशेष तरीके से पवित्र करना चाहता हूं।**
- **मेरे मित्र यीशु और मरियम होंगे।**
- **पाप के बदले मृत्यु।**

नए साल का महत्व

धीरे–धीरे ये साल भी बीतने वाला है। हम सभी का सामना जल्द ही नए साल २०२३ से हाने वाला है। आने वाला साल कैसा होगा, कैसा नही ये तो आगे जाकर ही पता चलेगा। लेकिन ये बीता हुआ साल कैसा रहा इससे हम सभी वाकिफ है। बीता हुआ वक्त कैसा भी रहा हो, चाहे वो अच्छा रहा हो अथवा बुरा रहा हो...! हर हाल मे उसे छोड कर आगे बढने का प्रयास करना चाहिए। क्योंकी बीता हुआ समय हमे या तो दुख देता है या तो अनुभव कराता है।

ऐसे मे इस नए साल यानी कि इस नए साल २०२३ पर आप खुद के भविष्य मे आने वाले समय के बारे मे निर्णय लेंगे। भविष्य के बारे मे विचार करेंगे।

''भुला दो बिता हुआ कल,
दिल मे बसाओ आने वाला कल,
हँसो और हँसाओ जो भी हो पल,
खुशियाँ लेकर आएगा ये आने वाला कल।''

आप सबको नए साल की हार्दिक शुभकामनाएं।

ज्ञान ही है जो हमारे मन से घटनाओं को निकाल कर हमे समय के साथ चलने मे सहायता करता है। यह वर्ष सभी के लिए ज्ञान भरा हो। ज्ञान

के साथ प्रसन्नता आती है। ज्ञान वास्तविक और परम सुख लाता है।

वैसे तो पूरी दूनिया मे नया साल अलग–अलग दिन मनाया जाता है और भारत के अलग–अलग क्षेत्रो मे भी नए साल की शुरूआत अलग–अलग दिन और समय होती है। लेकिन अंग्रेज कैलेंडर के अनुसार १ जनवरी से नए साल की शुरूआत मानी जाती है, क्योकि अंग्रेज कैलेंडर के हिसाब से ३१ दिसंबर को एक वर्ष का अंत होने के बाद १ जनवरी से नए कैलेंडर वर्ष की शुरूआत होती है। इसलिए इस दिन को पूरी दुनिया मे नया साल शुरू होने के उपलक्ष्य मे पर्व की तरह मनाया जाता है।

नया साल नई उम्मीदे, नए सपने, नए लक्ष्य और नए आइडियाज की उम्मीद देता है। इसलिए सभी लोग खुशी से इसका स्वागत करते है। ऐसा माना जाता है कि साल का पहला दिन अगर उत्साह और खुशियों के के साथ बीतेगा, तो पुरा साल खुशी से भर जाएगा। नया साल एक नई शुरूआत को दर्शाता है और हमेशा आगे बढने की सीख देता है।

नया साल, नयी उम्मीद, नए विचार
नयी शुरूवात
भगवान करे आपकी हर इच्छा
हकीकत बन जाए।

दोस्तो हर नया वर्ष हमारे लिए नए अवसरों की सौगात लेकर आता है। ये हमारे लिए एक एसा अवसर है जो कि हमे अतीत की गलतियों और विफलताओं को भूलकर आगे के जीवन के लिए बेहतर मार्ग चुनने का अवसर देता है। आशा है की आप भी अपने लिए नए अवसर और नई उम्मीद की तलाश कर के जीवन के मार्ग पर अग्रसर होंगे।

''नये साल की बधाई...

जो खुशी और आनंद से भरा हो।''

तारों का महत्व

1. तारा बहुत पहलेवादों का स्वर्गीय चिन्ह था।
2. भगवान ने दुनिया के लिए एक उध्दारकर्ता का वादा किया था और तारा अपने वादे की पुर्ति का संकेत था।
3. तारा हमे बायबल का पवित्र संदेश देता है।
4. तारा अर्थात क्रिसमस का तारा यानी स्टार दर्शाता है कि उध्दार या सैल्वेशन जगत में आ चुका है।
5. तारा मनुष्य को पृथ्वी पर नविगेट करने मे मदत करता है।
6. जब अंधेरा होता है तब तारे लोगों को रोशनी देते हुए आकाश को रोशन करते है।
7. उसके अलावा तारे बहुत महत्वपूर्ण है क्योकि वे पृथ्वी पर जीवन बनाते है।
8. तारा यानी 'स्टार' के चार अक्षरों में एस, टी, ए, एवं आर में क्रम है।

एस – सैल्वेशन या उध्दार
टी – ट्रांसफॉरमेशन या परिर्वतन
ए – अथॉरिटी या अधिकार